27 / 11 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदाकाल के लिए "इच्छामात्रम् अविद्या" और महादानी-वरदानी होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा महादानी और वरदानी हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा भ्रुकुटी सिंहासन पर विराजमान

→ एक चमकती हुई मणि हूं

→ मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ

■ अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ

■ अधिकारी हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा निरन्तर योगी हूँ

➳ _ ➳ स्नेह के सागर बाप के स्नेह में समाई हुई

→ सदा लवलीन आत्मा हूँ

■ मेरा बाबा मुझ आत्मा के स्नेह में निरन्तर गुण गाते हैं

➳ _ ➳ बापदादा के पास बहुत बड़ा

➳ _ ➳ बहुत सुन्दर चैतन्य मूर्तियों का

➳ _ ➳ मन्दिर वा चित्रशाला सामने है

→ मुझ आत्मा का चित्र और माला बाप देखते है

■ मुझ आत्मा को बाबा रोज

■ कितनी मीठी मीठी समझानी देते है

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा बाबा की मीठी समझानी

→ सुनने का रिटर्न

➳ _ ➳ सदा बाप समान सम्पन्न स्वरूप बनकर देती हूँ

→ अब मैं आत्मा सम्पन्न दर्शनीय मूर्त बन

→ अनेकों को दर्शन करा रही हूँ

■ अनेक तड़पती हुई आत्माओं के इन्तज़ार को

■ अब मैं आत्मा समाप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ अब दु:ख अशान्ति की अनुभूति

→ अति में जा रही है

➳ _ ➳ इसलिए मैं आत्मा अपनी अन्तिम स्टेज द्वारा

→ उसे समाप्त करने का कार्य

■ अति तीव्रता से मैं आत्मा कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर रचता हूँ

→ मैं आत्मा अपनी रचना के बेहद

→ दु:ख और अशान्ति की समस्या

■ को समाप्त करने का पुरुषार्थ कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर दु:ख हर्ता सुख कर्ता हूँ

→ सुख शान्ति के खज़ाने से

■ अपनी रचना को महादान और वरदान दे रही हूँ

→ मैं आत्मा लाइट हाउस माइट हाउस बन सारे विश्व मे

■ लाइट माइट की किरणें फैला रही हूँ

➳ _ ➳ जिसे जो चाहिए वो पाने के लिए

➳ _ ➳ सर्व आत्माये मुझ आत्मा की और आकर्षित हो रही है

→ सारे विश्व मे सुख, शांति की किरणें मैं आत्मा फैला रही हूँ

■ सबका मंगल हो

- सबका भला हो
- ऐसे शुभ भावना, शुभ कामना के
- वाइब्रेशन मैं आत्मा फैला रही हूँ

➢➢ इच्छा मात्रम् अविद्या स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने अब अल्पकाल की इच्छाओ का भी

→ त्याग कर दिया है

➳ _ ➳ जो भी अच्छा कर्म किया है

→ उस कर्म का फल तो

→ स्वत: ही सम्पन्न स्वरूप में मिल रहा है

- एक श्रेष्ठ कर्म करने का
- सौ गुणा सम्पन्न फल के स्वरूप में
- मुझ आत्मा को मिल रहा है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने जो भी त्याग किया है

→ उसका भाग्य आपेही मुझ आत्मा के पीछे आ रहा है

→ मुझ आत्मा को अब कोई इरछा नई रही है

- क्योंकि इच्छा - अच्छा कर्म समाप्त कर देती है

➳ _ ➳ मैं आत्मा इच्छा मात्रम् अविद्या हूं

→ मुझ आत्मा को इस इरछा की विद्या की भी अविद्या है

- मैं आत्मा महान ज्ञानी स्वरूप हूँ
- इसमें ज्यादा समझदार नई बनती हूँ

➳ _ ➳ यह होना ही चाहिए

➳ _ ➳ मैंने किया

➳ _ ➳ मुझे मिलना ही चाहिए

➳ _ ➳ इसको इन्साफ न समझना

➳ _ ➳ मेरा कुछ इन्साफ (न्याय) होना चाहिए

➳ _ ➳ भगवान के घर में भी इन्साफ न हो तो

➳ _ ➳ कहाँ इन्साफ मिलेगा

→ ऐसे कभी भी इन्साफ की मांग मैं आत्मा नई करती हूँ

- मैं आत्मा तो तृप्त आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा सर्व प्राप्तियों से तृप्त आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा अब सदा यह स्मृति में रखती हूँ कि

- "अप्राप्त नहीं कोई वस्तु मुझ मास्टर सर्व शक्तिमान के खज़ाने में"
- यही मेरे ब्राह्मण जीवन का स्लोगन भी है

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा इस गुह्य ज्ञान के साथ-साथ

➳ _ ➳ स्वयं का परिवर्तन भी गुह्य करती हूँ

→ स्व परिवर्तन कर सारे विश्व का परिवर्तन करती हूँ

- विश्व कल्याण के कार्य मे
- बापदादा की मददगार बनती हूँ